website: www.pawanprawah.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक
एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण

हम पूर्व अंक-7 मे विश्व के सबसे बड़े कुम्भ महोत्सव के बारे मे वैज्ञानिक कारणो को जानने हेतु एस.एम.एस. द्वारा गठित समूह व उसके अध्ययन के निष्कर्स, कुम्भ महोत्सव के धार्मिक पक्ष तथा राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता में प्रयागराज तीर्थ स्थल की भूमिका के विषय मे जानकारी प्राप्त की। इस अंक मे हम तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण को जानने का प्रयास करेंगे।

भाग-08

गतांक से आगे

कल्पवासी

पुराणों में तीर्थराज प्रयाग में निवास करने का विशेष पुण्य बताया गया है। इसे पवित्र तीर्थ भूमि में निवास (कल्पवास) पितरों को तारने वाला, सभी प्रकार के पापों का नाश करने वाला तथा भवसागर से पार करने वाला बताया गया है। इस स्थान का वास इतना महत्त्वपूर्ण है कि देवताओं को भी यहाँ निवास करने में गर्व होता है। देवताओं की ही भाँति भारतीय ऋषि मुनियों एवं तपस्वियों, मुनियों को भी प्रयाग वास अत्यन्त प्रिय रहा है। देवों तथा ऋषियों द्वारा सेवित इस पुण्य स्थली में नियमपूर्वक किया गया गंगा स्नान, दान एवं जल का पान पुनर्जन्म का बन्धन काटने वाला होता है, यद्यपि प्रयाग में सामान्यतः कल्पवास अनेक पुण्यों के फलस्वरूप होता है किन्तु माघ मास में प्रयाग के संगम क्षेत्र में व्रतनिष्ठ होकर कल्पवास करना उतना ही फलदायी होता है जितना अश्वमेघ आदि के अनुष्ठान से फल मिलता है। पुराणों में लिखा है कि माघ मास में संसार के सभी तीर्थ, सभी देवी-देवता, गन्धर्व, सिद्ध, चारण, ऋषि, मुनि तीर्थराज प्रयाग में आकर निवास करते हैं।

जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि प्रयाग में माघ महीने में कुम्भ मेला लगता है। यह गंगा, यमुना एवं अदृश्य सरस्वती के संगम पर एक छोटे नगर के रूप में प्रतिवर्ष जन्म लेता है और एक महीने के बाद स्वतः समाप्त हो जाता है। अतः माघ मास में गंगा यमुना के संगम क्षेत्र में नियमपूर्वक वास चूंकि यज्ञ सम्पादन जैसा फलदायी होता है। अतः इसे कल्पवास कहते हैं। पौराणिक साहित्य में कल्पवास शब्द का उल्लेख नहीं मिलता है किन्तु यह माघ में संगम क्षेत्र में वास के लिये व्यवहृत होता है। श्रद्धा, अहिंसा एवं संयम कल्पवास के मूलाधार हैं। कल्पवासियों के लिये एक समय के भोजन का नियम है।

अतः प्रयाग के संगम क्षेत्र में माघ मास में निवास करने वाले लोगों को कल्पवासी कहते हैं। माघ मास में लगने वाले माघ मेलों के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक कल्पवासी उत्तर प्रदेश से आते हैं। इसके बाद मध्य प्रदेश, बिहार, बंगाल, राजस्थान आदि से आते हैं। कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आसाम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश आदि राज्यों से बहुत ही कम कल्पवासी आते हैं।

पर्यटक

इलाहाबाद पर्यटन की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। संगम, इलाहाबाद हाईकोर्ट, आनन्दभवन, भारद्वाज आश्रम, किला, खुसरोबाग एवं इसके आसपास के अन्य केन्द्र पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र हैं। इन स्थलों के दर्शन हेतु प्रायः देश के कोने-कोने से लोग आते हैं। कल्पवास के विपरीत संगम में स्नान एवं पर्यटन के उद्देश्य से आने वाले लोगों की संख्या दूरी के अनुपात में बढ़ती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि प्रयाग की महत्ता दूरवर्ती राज्यों के लिये धर्म निरपेक्ष कार्यों एवं पर्यटन के लिये अधिक है (Caplan A.L.H. 1982, Page-157)।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि प्रयाग का तीर्थराज के रूप में आज भी भारत में अनेक लोगों के आकर्षण का केन्द्र है। वर्ष पर्यन्त यहां पर विभिन्न उद्देश्यों के लिये यात्रियों का आगमन होता रहता है। प्रयाग भारत के दूरस्थ राज्यों से आवागमन के साधनों विशेषकर रेलवे से जुड़ा है जिसके कारण भारतीय राष्ट्रीय एकता में निरन्तर योगदान दे रहा है।

इलाहाबाद के प्रमुख तीर्थयात्रा स्थल

अनेक ऋषि-मुनियों, योगियों तथा ज्ञानियों ने आदिकाल से भक्ति-योग, कर्मयोग एवं ज्ञानयोग की शिक्षा को प्रयाग की स्थली से प्रसारित किया है। वस्तुतः सम्पूर्ण प्रयाग का स्वरूप धार्मिक अलौकिकता से ओत-प्रोत है। यह असंख्य तीर्थों का केन्द्र है। प्रयाग के प्रमुख धार्मिक तीर्थ केन्द्र निम्न श्लोक से उद्धत है -

त्रिवणीयं माधवं सोमं भारद्वाजं च वासुकिम्।
वन्देऽक्षयवटं शेषं प्रयागं तीर्थनायकम्।।

त्रिवेणी, माधव, सोमेश्वर, भारद्वाज, वासुकी, अक्षयवट, शेष और तीर्थराज प्रयाग से आठ प्रधान तीर्थ हैं। इनका वर्णन संक्षिप्त में निम्न है-

इलाहाबाद के शिव मंदिर

(1) मनकामेश्वर मन्दिर

प्रयाग की परिक्रमा में अक्षयवट के दर्शन के पश्चात् मनकामेश्वर महादेव का दर्शन तीर्थयात्रियों द्वारा किया जाता है। यह मन्दिर किले के पश्चिम यमुना नदी के किनारे मिंटो पार्क के पास स्थित है। मन्दिर में शिवजी की काले पत्थर का लिंग है।

(2) नाग वासुकि मन्दिर

यह गंगा के किनारे दारागंज में स्थित है। नागपंचमी के अवसर पर यहां विशाल मेला लगता है। मन्दिर में नागवासुकि के दर्शन एवं उन पर दूध चढ़ाने की प्रथा आज भी प्रचलित है। मन्दिर में नागवासुकि की भव्य मूर्ति है। शेषनाथजी का स्थान नागवासुकि और शिवकोटि के मध्य गंगा तट पर है, जिसे बलदेव मन्दिर कहते हैं।

चित्र.1 (1) मनकामेश्वर मन्दिर (2) नाग वासुकि मन्दिर (3) दशाश्वमेध मन्दिर (4) शिवकुटी मन्दिर

चित्र.2 (1)अलोपी देवी मन्दिर व (2)ललिता देवी मन्दिर

(3) दशाश्वमेध मन्दिर

गंगा जी के किनारे दारागंज में दशाश्वमेध घाट पर यह अत्यन्त प्राचीन एवं विशाल मन्दिर है। मन्दिर के मुख्य गर्भगृह में दो काले पत्थर के लिंग हैं। एक लिंग दशाश्वमेध महादेव का और दूसरा ब्रह्मेश्वर महादेव का है। दोनों के मध्य एक त्रिशूल गड़ा हुआ है। मत्स्य पुराण के अनुसार इस स्थान पर ब्रह्मा ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे।

(4) शिवकुटी मन्दिर

नगर के उत्तरी छोर पर गंगा के किनारे शिवकुटी का प्राचीन मन्दिर है। कहा जाता है कि वन गमन के समय श्री राम ने यहां शिवलिंग की पूजा की थी। शिवलिंग के अतिरिक्त यहां मातापार्वती की एक सिद्धमूर्ति खड़ी अवस्था में है जो समस्त कामनाओं की पूर्ति करने वाली है।

इलाहाबाद के शक्तिपीठ

(1) अलोपी देवी मन्दिर

दारागंज के पश्चिम अलोपी बाग मुहल्ले में अलोपशंकरी देवी का मन्दिर है। इस प्राचीन मंदिर में कोई मूर्ति नहीं है। यहां केवल एक पालना है उसी की पूजा अर्चना की जाती है। तन्त्रचूड़ामणि के अनुसार 51 शक्ति पीठों में अलोपी देवी भी हैं। नवरात्रि के अतिरिक्त प्रत्येक शुक्रवार और सोमवार को मंदिर परिसर में मेला लगता है। कहा जाता है कि सती के हाथ की एक अंगुली यहां गिरी थी। नवरात्रि पर यहाँ बड़ा मेला लगता है। मंदिर का प्रबन्धन निर्वाणी अखाड़े के अधीन है।

(2) ललिता देवी मन्दिर

प्रयाग में स्थित ललिता देवी की गणना शक्ति पीठों में होती है। तांत्रिकों के 64 पीठों में एक प्रयाग भी है, जिसकी अधिष्ठात्री ललिता देवी हैं। इनका मन्दिर नगर के दक्षिण यमुना तट की ओर मीरापुर में है। इस मन्दिर में पाण्डवों ने भी पूजा की थी। मन्दिर के वर्तमान भव्य स्वरूप प्रदान करने का श्रेय ब्रह्मलीन प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी को जाता है। इस मंदिर के संदर्भ में निम्न पंक्तियाँ उद्धत हैं –

हस्तांगुलि दुई गिरा प्रयागा, तरनि सुता तट सुन्दर जागा।
जेंहि भू गिरा अंग अनूपा, महाशक्ति भई ललिता रूपा।।

(3) कल्याणी देवी मन्दिर

ललिता देवी के मन्दिर के निकट ही कल्याणी देवी का मन्दिर है। 108 शक्ति पीठों में

कल्याणी देवी का भी नाम है। पुरातत्त्वविदों के अनुसार कल्याणी देवी की मूर्ति 2500 वर्ष पुरानी है। महाशक्ति सिद्धपीठ माँ कल्याणी का प्रयाग में अनुपम स्थान है। प्रयाग में भगवती ललिता देवी के रूप में विश्रत हुई। कल्याणी देवी का यह प्राचीन धाम प्रयाग के दर्शनीय स्थलों के रूप में जाना जाता है। इसकी प्राचीनता, पवित्रता एवं कल्याणकारी ललिता की छवि उन्हें लोक कल्याण की देवी के रूप में प्रसिद्धि दिलाती हैं। नवरात्र के दौरान मंदिर परिसर को आकर्षक पुष्पों से सजाया जाता है। इसके साथ भगवती कल्याणी का माँ के नव दुर्गा स्वरूपका श्रृंगार भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त जनपद में भिन्न-भिन्न भागों में काली बाड़ी मन्दिर, माँ समया मन्दिर, शीतला माता मन्दिर, खेमामाई मंदिर, शीतला धाम, ऐन्द्रीमाता और माँ गोरख्या देवी जी के मन्दिर प्रसिद्ध है।

कुम्भ के बारे मे अधिक जानकारी अगले अंक मे---